लेवल्स एंड ट्रेंड्स इन चाइल्ड मोर्टेलिटी

प्रिलिम्स के लिये:

सतत् विकास लक्ष्य, लेवल्स एंड ट्रेंड्स इन चाइल्ड मोर्टेलिटी, बाल मृत्यु अनुमान के लिये संयुक्त राष्ट्र अंतर-एजेंसी समूह, पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर (U5MR)।

मेन्स के लिये:

लेवल्स एंड ट्रेंड्स इन चाइल्ड मोर्टेलिटी,भारत में मृत-जन्म तथा बाल मृत्यु दर से संबंधित मुद्दे।

स्रोत: डाउन टू अर्थ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में बाल मृत्यु दर अनुमान के लिये संयुक्त राष्ट्र अंतर-एजेंसी समूह द्वारा "**लेवल्स एंड ट्रेंड्स इन चाइल्ड मोर्टेलिटी**" **शीर्षक** से एक रिपोर्ट जारी की है, जिसमें बताया गया है कि वर्ष 2022 में वैश्विक स्तर पर पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु की वार्षिक संख्या वर्ष 2000 के अनुमान से आधे से अधिक कम (9.9 मिलियन से 4.9 मिलियन तक) हो गई है।

रिपोर्ट की मुख्य बातें क्या हैं?

- **बाल मृत्यु दर में ऐतिहासिक कमी:**
  - **वर्ष 2022** में पाँच वर्ष से कम आयु में होने वाली मौतों की वार्षिक संख्या घटकर **4.9 मिलियन** हो गई, जो बाल मृत्यु दर को कम करने के वैश्विक प्रयास में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।
  - यह वर्ष 2000 के बाद से वैश्विक स्तर पर **पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर** (**U5MR**) में आधे से अधिक की गिरावट के साथ जुड़ा हुआ है।
    - सरकारों, संगठनों, स्थानीय समुदायों, स्वास्थ्य देखभाल पेशेवरों एवं परिवारों सहित विभिन्न हितधारकों की निरंतर प्रतिबद्धता के कारण, पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर में गिरावट लगातार बनी हुई है।
- **मृत्यु दर का लगातार उच्च होना:**
  - प्रगति के बावजूद बच्चों, किशोरों एवं युवाओं के बीच वार्षिक मृत्यु दर अस्वीकार्य रूप से अधिक बनी हुई है।
  - **वर्ष 2022** में जीवन के पहले महीने के दौरान पाँच वर्ष से कम उम्र के**2.3 मिलियन बच्चों की मृत्यु** हो गई तथा **1 से 59 महीने की उम्र के बीच अतिरिक्त 2.6 मिलियन बच्चों की मृत्यु** हो गई।
    - इसके अतिरिक्त **5 से 24 वर्ष की आयु के 2.1 मिलियन बच्चों, किशोरों तथा युवाओं की भी मृत्यु** हुई।
- **बड़ी संख्या में जीवन की हानि:**
  - वर्ष 2000 से वर्ष 2022 के बीच विश्व के 221 मिलियन बच्चों, किशोरों तथा युवाओं की मृत्यु हुई जिसकी **तुलना नाइजीरिया की लगभग पूरी आबादी से** की जा सकती है।
    - नवजात शिशुओं की मृत्यु (जन्म के 28 दिनों के भीतर शिशु की मृत्यु) के कारण पाँच वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु 72 मिलियन थी और 1-59 महीने की आयु के बच्चों की मृत्यु की संख्या 91 मिलियन थी।
  - नवजात अवधि में पाँच साल से कम उम्र की मृत्यु की प्रवृत्ति 2000 में 41% से बढ़कर वर्ष 2022 में 47% हो गई है।
- **उत्तरजीविता की संभावनाओं में असमानता:**
  - बच्चों को **भौगोलिक स्थिति**, **सामाजिक-आर्थिक स्थिति** और चाहे वे नाज़ुक या संघर्ष-प्रभावित सेटिंग्स में रहते हों, जैसे कारकों के आधार पर जीवित रहने की असमान संभावनाओं का सामना करना पड़ता है।
  - ये असमानताएँ बच्चों की कमज़ोर आबादी के बीच लगातार और गहरी असमानताओं को उजागर करती हैं।
- **क्षेत्रीय असमानताएँ:**
  - जबकि बाल मृत्यु दर की वैश्विक दर में गिरावट आ रही है, महत्त्वपूर्ण क्षेत्रीय असमानताएँ हैं।
    - वर्ष 2030 से पहले 5 वर्ष से कम उम्र के 35 मिलियन बच्चे अपनी जान गँवा देंगे और **उप-सहारा अफ्रीका में सबसे अधिक मौतें होंगी।**

- देश संयुक्त राष्ट्र-अनिवार्य **सतत् विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goal - SDG)** लक्ष्यों को समय पर पूरा नहीं करेंगे।
    - हालाँकि यदि प्रत्येक देश ने पाँच साल से कम उम्र की बच्चों की रोकी जा सकने वाली मौतों को समाप्त करने के SDG-5 दृष्टिकोण को महसूस किया और समय पर प्रासंगिक मृत्यु दर लक्ष्यों को पूरा किया, तो 9 मिलियन से **अधिक बच्चे पाँच वर्ष की आयु तक** जीवित रहेंगे।
- मौजूदा रुझानों के तहत 59 देश पाँच मृत्यु दर लक्ष्य के तहत सतत् विकास लक्ष्य से चूक जाएँगे और 64 देश नवजात मृत्यु दर लक्ष्य से चूक जाएँगे।

- **अनुशंसाएँ:**
  - कई निम्न और निम्न-मध्यम आय वाले देशों ने पाँच साल से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु दर में वैश्विक गिरावट से बेहतर प्रदर्शन किया है, कुछ मामलों में 2000 के बाद से उनकी दरों में दो तिहाई से अधिक की कमी आई है।
    - जब **मातृ, नवजात शिशु और बाल स्वास्थ्य तथा उत्तरजीविता** में निवेश किया जाता है तो ये प्रेरक परिणाम उच्च रिटर्न दर्शाते हैं।
  - वे इस बात का महत्त्वपूर्ण प्रमाण भी प्रदान करते हैं कि **यदि संसाधन की कमी वाली स्थितियों में भी सतत् और रणनीतिक कार्रवाई की जाती है,** तो पाँच साल से कम उम्र की मृत्यु दर के स्तर तथा रुझान में बदलाव आएगा एवं जीवन बचाया जाएगा।

बाल मृत्यु दर को रोकने हेतु क्या किया जा सकता है?

- **परिवार नियोजन सेवाओं तक पहुँच: व्यापक परिवार नियोजन सेवाएँ प्रदान करने से अनपेक्षित गर्भधारण को रोकने में मदद मिल सकती है, जिससे समय से पहले जन्म और मृत जन्म के जोखिम को कम किया जा सकता है।**
- **प्रसवपूर्व सेवाओं में सुधार:** गर्भवती महिलाओं के लिये नियमित स्वास्थ्य और पोषण जाँच सहित प्रसवपूर्व देखभाल सेवाओं को बढ़ाने से स्वस्थ गर्भधारण में योगदान हो सकता है तथा समय से पहले जन्म एवं मृत जन्म की संभावना कम हो सकती है।
  - गर्भवती माताओं के लिये आयरन फोलिक एसिड अनुपूरण तक पहुँच सुनिश्चित करने से मातृ और भ्रूण के स्वास्थ्य में भी सुधार हो सकता है।
- **जोखिम कारकों की पहचान और प्रबंधन: समय से पहले जन्म तथा मृत जन्म से जुड़े जोखिम कारकों की पहचान एवं प्रबंधन के लिये प्रभावी स्क्रीनिंग कार्यक्रम लागू करने से प्रतिकूल परिणामों को कम करने में मदद मिल सकती है।**
  - इसमें गर्भावस्था के दौरान उच्च रक्तचाप, मधुमेह और संक्रमण जैसी स्थितियों का प्रबंधन शामिल है।
- **डेटा रिकॉर्डिंग और रिपोर्टिंग में सुधार:** समय से पहले जन्म तथा मृत जन्म को सटीक रूप से रिकॉर्ड करने एवं रिपोर्ट करने के लिये डेटा संग्रह प्रणालियों को बढ़ाना समस्या की भयावहता को समझने व लक्षित हस्तक्षेपों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिये महत्त्वपूर्ण है।
  - प्रसवकालीन मृत्यु दर की रिपोर्ट करने के लिये रोगों के अंतर्राष्ट्रीय वर्गीकरण जैसे मानकीकृत वर्गीकरण प्रणालियों को अपनाने से डेटा की गुणवत्ता और तुलनीयता में सुधार हो सकता है।
- **निगरानी दिशा-निर्देश लागू करना: मातृ और प्रसवकालीन मृत्यु निगरानी दिशा-निर्देशों का प्रभावी कार्यान्वयन सुनिश्चित करने से प्रवृत्तियों, जोखिम कारकों तथा हस्तक्षेप के अवसरों की पहचान करने में मदद मिल सकती है।**
  - इसमें नीति और अभ्यास को सूचित करने के लिये मातृ तथा प्रसवकालीन मौतों की समय पर रिपोर्टिंग तथा विश्लेषण शामिल है।

महिलाओं के पोषण और बाल मृत्यु दर को रोकने हेतु भारत की पहल क्या हैं?

- **पोषण अभियान:** भारत सरकार ने वर्ष 2022 तक "कुपोषण मुक्त भारत" सुनिश्चित करने के लिये **राष्ट्रीय पोषण मिशन (NNM) या पोषण अभियान** प्रारंभ किया है।
  - इसके अलावा पोषण अभियान, **मिशन सक्षम आँगनवाड़ी और पोषण 2.0** की प्रभावशीलता तथा दक्षता को बढ़ाने के लिये, सभी राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों हेतु **बजट 2021-2022** में एकीकृत पोषण सहायता कार्यक्रम की घोषणा की गई थी।
  - शासन में सुधार के लिये पोषण ट्रैकर के अंतर्गत पोषण गुणवत्ता में सुधार और मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं में परीक्षण, वितरण को सुदृढ़ करने तथा प्रौद्योगिकी के इष्टतम प्रयोग के लिये उपाय किये गए हैं।
- **एनीमिया मुक्त भारत अभियान:** वर्ष 2018 में शुरू किये गए इस मिशन का लक्ष्य एनीमिया की वार्षिक गिरावट दर में सुधार करते हुए इसमें एक से तीन प्रतिशत अंक की वृद्धि करना है।
- **मिशन शक्ति:** 'मिशन शक्ति' में महिलाओं की सुरक्षा और महिला सशक्तीकरण के लिये क्रमशः दो उप-योजनाएँ 'संबल' तथा 'सामर्थ्य' शामिल हैं।
  - वन स्टॉप सेंटर, **महिला हेल्पलाइन (181-WHL),** बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ **और नारी अदालत** जैसी योजनाएँ **'संबल' उप-योजना** का हिस्सा हैं।
  - प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना, पालना, शक्ति सदन, सखी निवास और महिलाओं के सशक्तीकरण के लिये हब के घटक **'सामर्थ्य' उप-योजना का हिस्सा** हैं।
- **एकीकृत बाल विकास सेवा योजना:** इसे वर्ष 1975 में शुरू किया गया था और इस योजना का उद्देश्य 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों तथा उनकी माताओं को भोजन, प्रीस्कूल शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण, स्वास्थ्य जाँच एवं रेफरल सेवाएँ प्रदान करना है।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. नमि्नलखिति में से कौन-से 'राष्ट्रीय पोषण मशिन (नेशनल न्यूट्रशिन मशिन)' के उद्देश्य हैं? (2017)

1. गर्भवती महलिाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं में कुपोषण संबंधी जागरूकता उत्पन्न करना।
2. छोटे बच्चों, कशिोरयिों और महलिाओं में रक्ताल्पता को कम करना।
3. बाजरा, मोटे अनाज और अपरष्कृित चावल के उपभोग को बढ़ाना।
4. मुर्गी के अंडों के उपभोग को बढ़ाना।

नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयिे:

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 1, 2 और 3
(c) केवल 1, 2 और 4
(d) केवल 3 और 4

उत्तर: (a)

??????:

प्रश्न. क्या लैंगकि असमानता, गरीबी और कुपोषण के दुश्चक्र को महलिाओं के स्वयं सहायता समूहों को सूक्ष्म वति्त (माइक्रोफाइनेंस) प्रदान करके तोड़ा जा सकता है? सोदाहरण स्पष्ट कीजयि। (2021)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/levels-and-trends-in-child-mortality-1